# कवि परिचय

चैत्र मास तिथि चतुर्थी शुक्ल पक्ष शशिवार।
प्रातः दशवादन समय लिया मनुज वपु धार॥

दो सहस्त्र पन्द्रह रहा विक्रम का वह अब्द।
पण्डित होरी लाल गृह मुखर पौत्र का शब्द॥

मेष राशि वृष लग्न था भरणी प्रिय नक्षत्र।
श्री भगवान दयाल के जन्मा एक कुपुत्र॥

तुला राशि गुरु राहु थे, बुध रवि थे मीनस्थ।
धनु मे शनि शशि मेष में भौम शुक्र मकरस्थ॥

उस बेला बव करण में योग रहा विष्कम्भ।
पीड़ा के थे विषम क्षण शिव का था अवलम्ब॥

मध्य नाड़ि गजयोनि में मानव गण में गण्य।
राम सहेली जननि से उपजा व्यक्ति नगण्य॥

कलावती सुपितामही थीं वत्सलता मूर्ति।
उनके आज अभाव की कैसे होगी पूर्ति॥

शिव कुमार था रख दिया जनकाग्रज ने नाम।
अशिव कार्य उसके सदा अनृत हुआ अभिधान॥

मैनपुरी जनपद सुभग सढ़ नामक है ग्राम।
भारत उत्तर प्रान्त में विकसे इन्द्रिय ग्राम॥

मध्य देश भोपाल में जनक कर रहे कार्य ।
किया अध्ययन बाल ने गुरुवर थे सत्कार्य ।।

सर्व प्रथम रह कर सदा शिक्षा की शुभ प्राप्त ।
गुरुजन स्नेह सदा रहा मित्रमान बहु आप्त ।।

संस्कृत भाषा भारती अर्थशास्त्र भूगोल ।
सुधा मयी गुरुकृपा से पाया ज्ञान अमोल ।।

विद्यार्जन रत छात्र था वधू मिली रत्नेश ।
जीवन तब से बन गया सुखद प्रणय रत्नेश ।।

केन्द्रीय शासन का हुआ अधिकारी उपयुक्त ।
अपनी निष्ठा लगन को किया सतत सुप्रयुक्त ।।

मध्य देश कटनी नगर मध्य किया जब कार्य ।
प्रभु ने लेखन कर्म को बना दिया अनिवार्य ।।

सतत प्रेरणा शम्भु की लिखा गयी "राधेय" ।
इस जन को कवि कर्म तो रहा सदा अज्ञेय ।।

●●●